बच्चा

प्रेमचन्द

अनुवादः आशुतोष झा

लोक गंगूकेँ ब्राह्मण कहैत छैक। ओकरा अपना सेहो सैह बुझाइत छैक। हमर आन सभ टा खबास हमर समक्ष झुकैत अछि। मुदा गंगू हमरा ओना कहियो अभिवादन नहि करैत अछि। संभवतः ओकरा होइत छैक जे हमही ओकरा प्रणाम करियैक। ओ कखनो कोनो ऐंठ थारी-बासन नहि छुबैत अछि। हमरा अहू बातक साहस नहि अछि जे गर्मीक समयमे ओकरा पंखा हौंक' लय कहियैक। कखनो काल क' जखन कियो आन ल'ग मे नहि रहैत छैक आ हम पसेनासँ तर रहैत छी ओ पंखा उठा लैत अछि। मुदा ओकर रंगति तेहन लगैत रहैत छैक जेना ओ हमर बड्ड पैघ उपकार क' रहल हो। ओ पिनकाह सेहो अछि आ कनियो घुड़की नहि सहि सकैत अछि। ओकरा संगी-साथी नहियेँक बरोबरि छैक। सईस अथवा कोनो नोकर संग बैसब ओकरा अपन शानक विरुद्ध बुझाइत छैक। हम ओकरा कहियो ककरो संग मैत्रीपूर्ण व्यवहार करैत नहि देखने छियैक। आ ने ओ कहियो मेला-तमासा देख' लय जाइत अछि।

ओ पूजा कहियो नहि करैत अछि आ ने कहियो नदीमे नहाइ लय जाइत अछि। ओ पूर्णतः निरक्षर अछि। तैयो ओ चाहैत अछि जे कोनो ब्राह्मण के भेट' बला सम्मान ओकरो भेटै। आ से कियेक नहि हो ? जँ आर लोक सभ अपन पुरखाक द्वारा छोड़ल धनक आधार पर इज्जति पाब' चाहैत अछि तँ गंगू सेहो अपन वंशक आधार पर सम्मान अवश्ये प्राप्त कर' - चाहत।

हम अपन खबास सभसँ बिनु आवश्यकताके गप्प नै करैत छी। ओकरा सभकेँ कठोर निर्देश छैक जे ओ सभ हमर एकान्ततामे व्यवधान नहि करय यावत् तक कि ओकरा सभकेँ हमरा लग पठाओल नहि गेल हो। छोट-मोट काज सभ जेना एक गिलास पानि ल' लेब, जुत्ता पहिरब अथवा लेम्प जरा लेब इत्यादिक लेल कोनो खबास केँ बजाब' सँ बेसी हमरा अपने क' लेब पसिन्न अछि। ओ हमरा स्वतंत्रता आ आत्मविश्वासक अनुभूति दिय' बैत अछि। नोकर सभ हमर आदतिसँ परिचित भ' गेल अछि आ ओ सभ बिरले हमरा पेरसान करैत अछि। यदि

ओ सभ कखनो बिनु बजओने हमरा लग अबैत अछि तँ ओ दरमाहाक अग्रिम भुगतानक हेतु निवेदन करबा लय अथवा आन नोकर सभक विरुद्ध नालिस करबा लय। मुदा एहि दुनू क्रिया के हम निंदनीय बुझैत छी। जखन ओकरा सभ के हम नियमित रूपसँ भुगतान कइये दैत छियैक आ पर्याप्त सेहो तखन हमरा एकर कोनो कारण नहि बुझाइत अछि जे ओ सभ अपन दरमाहा के पन्द्रहे दिनमे समाप्त क' दियए। आ चुगिलखोरी के हम मनुष्यक बहुत पैघ कमजोरी अथवा चाटुकारिताक एकटा प्रकार बुझैत छी। ई दुनू अधम कार्य थिक।

एक दिन भिनसरमे गंगू बिनु बजओने हमरा लग आयल। हम खौंझा गेलहुँ। क्षुब्ध होइत ओकरा पुछलहुँ जे ओ कियेक आयल अछि। गंगूक चेहरासँ लगैत छल जे ओ किछु कह' चाहैत छल मुदा पूर्ण प्रयासक बादो ओकर ठोर पर शब्द नहि आबि रहल छलैक। कने रुकि क' हम फेरसँ पुछलियैक, "की गप्प छैक ? तो बजैत कियेक ने छह ? तोरा ई बूझल छह जे हमरा भिनसरमे टहलबाक लेल जेबामे देरी भऽ रहल अछि!" कने रुकि-रुकि क' जवाब देलक, "कृपा क' कँ अहाँ जयबामे देरी जुनि करियौ। हम कखनहुँ बादमे आबि जायब।" ई तँ आओर खराब भेल, हम सोचलहुँ। तखन हम हड़बड़ीमे छलहुँ गंगू अपन कथा संक्षेपहिमे समाप्त क' दितय। आ जखन ओ ई बुझि के आओत जे हम बेसी फुरसतिमे छी तँ हमर कैक घंटाक समय ओ नष्ट क' सकैत अछि। ओ तखनहि टा हमरा व्यस्त बुझय जखन हम पढ़ैत अथवा लिखैत रहैत छलहुँ। जखन हमरा ओ किछु सोचबाक मूडमे एसकर पाबय तँ ओकरा होइ जे हम व्यर्थक समय बिता रहल छी। ई अवश्यम्भावी छलैक जे एहने कोनो क्षणमे ओ हमरासँ आवि सटत, एहि गप्पसँ पूर्णत: अनभिज्ञ जे ओ समय हमरा लेल कतेक मूल्यवान छल।

तैं हम चाहैत छलहुँ जे ओकरासँ ओतहि आ तखने छुटकारा भेटि जाय। ओकरासँ हम कहलियैक, "जँ तोँ अग्रिम भुगतानक लेल आयल छह तँ निश्चिन्त रह' ओ तोरा नै भेटतह।"

"हम अग्रिम भुगतान नै चाहैत छी।" गंगू बाजल आ जोड़लक, " अग्रिम भुगतानक लेल हम अहाँकेँ कहियो नै कहने छी।"

"तखन तोरा जरूर ककरो विरुद्ध किछु नालिस करबाक हेतह! तोरा बुझल छह जे चुगलखोरीसँ हमरा कतेक घृणा अछि।"

"नै महाशय, हमरा ककरो विरुद्ध कोनो नालिस नै करबाक अछि।"

"तखन कोन वस्तुक लेल तोँ हमरा तंग कर' आयल छह ?" हम अगुताइत बजलहुँ। गंगू अपन रहस्य खोलबाक एक बेर आर प्रयास केलक। हम ओकर चेहरासँ ई बुझि सकैत

छलहुँ जे अपन गप्प कहबाक ओ शक्ति जुटा रहल छल। अंतमे ओ बाजि उठल, "श्रीमान हम काज छोड़' चाहैत छी। आब हम अहाँक सेवा नहि क' सकब।''

ई अपन प्रकारक पहिल आग्रह छलैक । मोनमे आहतक अनुभूति भेल। हम एकटा आदर्श मालिक मानल जाइत छलहुँ आ नोकर खबास सभ हमरा ओतय रहब अपन भाग्य बुझैत छल।

"तोँ किएक जाय चाहैत छह ?'' हम पुछलियैक।

"मालिक अहाँ दयाक मूर्ति छी।'' ओ कहलक, फेर बाज' लागल, "यावत् धरि कोनो विशेष कारण नहि होइ ताबत अहाँकेँ के छोड़' चाहत ? हम अपनाकेँ एहन परिस्थितिमे पबै छी जत' हमरा लग कोनो विकल्प नहि अछि। हम नै चाहैत छी जे हमरा चलैत लोक अहाँ पर आगुंर उठाबय।''

ई अत्यन्त कुतूहलक गप्प छल। हम भिनसरमे अपन टहलबा द' पूर्णत: बिसरि गेल छलहुँ । कुरसी पर बैसैत ओकरासँ हम कहलियैक, "तो एना बुझौअलिमे कियेक गप्प क' रहल छह ? साफ-साफ कह' ने जे तोहर मोनमे की छह ?'' गंगू फेरसँ रुकि-रुकि क' बाज' लागल, "मालिक असलमे बात छैक जे.... ओ मौगी जेकरा हालहिमे विधवा-घरसँ निकालि देल गेल छैक..... ओ गोमती देवी .....।'' आ बिनु अपन वाक्य पूरा केने ओ चुप्प भ' गेल।

अधीरतापूर्वक हम पुछलियैक, "तँ ओकरासँ तोहर नोकरीकेँ कोन सम्बन्ध छैक ?''

"मालिक ओकरासँ हम बियाह कर' चाहैत छी।'' गंगू बाजल छल।

हम विस्मयसँ ओकरा दिस देखलहुँ। ई पुरानपंथी ब्राह्मण, जेकरा आधुनिक सभ्यता छूनौ नहि छलैक एहन स्त्रीसँ कोना विवाह करबाक निर्णय नेने छल जकरा कोनो स्वाभिमानी व्यक्ति अपन घरक लगो आब' देब पसिन्दनहि करत ? गोमती हमर सबहक शान्त मोहल्लाकेँ आन्दोलित कऽ देने छल। किछु वर्ष पहिने ओ विधवा-घरमे प्रवेश केलक। विधवा घरक पदाधिकारीगण दू बेर ओकर बियाह करओलथिन मुदा दुनू बेर ओ एक-दू सप्ताहक भीतर घुरिकेँ चल आयल। अंततोगत्वा विधवा-घर ओकरा निकालि बाहर करबाक निर्णय लेलक। आ आब मोहल्लहिमे एकटा कमरा भाड़ा पर ल' नेने छल आ प्रेमातुर छौंड़ा सभक लेल अत्यन्त आकर्षणक वस्तु भ' गेल छल।

हमरा गंगू पर क्रोधो भेल आ ओकरासँ सहानुभूति सेहो। "ई बूड़ि के बियाह करबाक लेल कोनो आन मौंगी कियेक नहि भेटलैक ?'' हमरा मोनमे भेल छल। हमरा विश्वास छल जे ओ मौगी एकरा लग किछु दिनसँ बेसी नहि टिकतैक। जँ गंगू आर्थिक रूपेँ सुदृढ़ रहितय तँ छः मासक लग-पास ओकरा संग ओ रहि जइतय मुदा हमरा विश्वास छल जे एखुनका परिस्थितिमे ई विवाह किछु दिनसँ बेसी नहि टिकतैक।

"ओकर पछिलुका जिन्दगी द' तोरा बुझल छह?'' हम ओकरासँ पुछलियैक।

"मालिक ओ सभ झूठ बात छैक।'' ओ पूर्ण दृढ़ताक संग बाजल छल, " बिनु कोनो कारणकेँ लोक सभ ओकरा बदनाम करैत छैक।''

"की व्यर्थक गप्प करैत छह।'' हम कहलियैक, "एहि बातकेँ की तोँ अस्वीकार क' सकैत छह जे ओ तीन टा पतिकेँ छोड़ने अछि ?''

"ओ की करितस,'' गंगू शांतिपूर्वक जवाब देने छल, "जेँ ओ सभ ओकरा निकालि देलकै ?''

"केहन बूड़ि छह तोँ !'' हम कहलियैक, "तोरा ई बुझाइत छह जे कियो व्यक्ति कोनो स्त्री सँ मात्र बियाह टा करबाक लेल आओत, विवाह पर हजारो टाका व्यय करत आ बिनु कारणें ओहि विवाहिता के अपना ओतय सँ निकालि देत ?''

गंगू कविजन्य उत्साह देखबैत कहलक, "जत' प्रेम नै छैक, अहाँ उमेद नै क' सकैत छियैक जे कोनो मउगी अहाँ संगे रहि जायत। कोनो स्त्रीक हृदयकेँ अहाँ मात्र खेनाइ आ रहबाक सुविधा द' केँ नहि जीति सकैत छियैक। जे कियो गोमतीदेवीसँ बियाह केलक से सभ बुझलकै जे ओ सभ ओकरासँ विवाह कऽ केँ एकटा विधवा पर कृपा क' रहल छैक। आ ओ सभ ई मानि नेने छल जे गोमती ओकरा सभटाक हेतु सभ किछु केने जायत। मुदा ककरो हृदय जीतबाक लेल सभसँ पहिने अपनाकेँ बिसार' पड़ैत छैक। आ तकर अतिरिक्त, मालिक, ओकरा कखनो-काल दौर पड़ैत छैक। ओ तखन किछु-किछु अण्ड-बण्ड बाज' लगैत अछि आ बेहोस भ' जाइत अछि। लोक सभ कहैत छैक जे ओ कोनो डाइनक प्रभावमे अछि।

"आ' तो ओहन स्त्रीसँ विवाह कर' चाहैत छह।'' हम कहलियैक, "तोरा ई नहि बुझाइत छह जे तोँ विपत्तिकेँ निमन्त्रण द' रहल छहक ?''

शहीदक मुद्रामे गंगू बाजि उठल, "भगवान चाहलनि तँ ओकरा अपनएबाक उपरान्त हम अपनाकेँ कोनो योग्य बना सकब।''

"माने तोँ अंतिम फैसला ल' नेने छह ?'' हम पुछलियैक।

"हँ मालिक।'' ओकर जवाब छलैक।

"बेस ,'' हम कहलहुँ, "तखन हम तोहर नोकरी छोड़बाक प्रस्ताव स्वीकार करैत छियह।''

सामान्यत: हम पुरान रीति-रेवाज एवं निरर्थक परम्परा इत्यादिमे विश्वास नहि करैत छी! मुदा कोनो व्यक्ति जे एहन संदेहास्पद चरित्रक स्त्रीसँ विवाह करबा लय उद्यत अछि, तेहनकेँ अपन घर पर रखबामे हमरा खतरा बुझायल। ओ कैक प्रकारक समस्याक कारण भ' सकैत छल। हमरा जनैत ओहि स्त्रीसँ विवाह करबामे गंगू कोनो भुखायल मनुक्ख जकाँ व्यवहार क' रहल छल। ओ रोटीक टुकड़ा सुखायल आ कुस्वाद छल से तथ्य ओकरा लेल अर्थहीन छल। हमरा अलगे रहबामे बुद्धिमत्ता बुझायल।

पाँच मास गुजरि गेल। गंगू गोमतीसँ विवाह क' लेने छल। ओ ओही मोहल्लामे एक टा फूसक झोंपड़ीमे रह' लागल। ओ अपन गुजारा आब पैकारी क' के करैत छल। जखन कखनौ ओ हमरा रस्ता पर भेटाबय तँ हम रुकि क' ओकर कुशल क्षेम पुछैत छलहुँ। ओकर जिन्दगी हमरा लेल अत्यधिक रुचिक वस्तु भ' गेल छल। हम ई जानबाक लेल अगुतायल छलहुँ जे गंगूक दिवास्वप्न, दु:स्वप्नमे कहिया परिवर्तित होयत। मुदा हम ओकरा सदिखन प्रसन्न देखियैक। ओकर चेहरा पर रहि सकैत छैक। ओ प्रतिदिन लगभग एक टाका कमाइत छल। आश्रमक वस्तु सभ किनलाक बाद ओकरा लग लगभग दस आना बचि जाइत छलैक। आ ओहि दस आना पाइमे निश्चित रूपसँ कोनो अलौकिक शक्ति हेतैक जे ओकरा आत्मतुष्टि दैत छलैक।

एक दिन हम सुनलहुँ जे गोमती भागि गेल। नहि जानि कियेक मुदा हमरा अत्यंत आनन्द भेल छल। संभवत: गंगूक आत्मविश्वास आ सुख हमरा ओकरा प्रति ईर्ष्यालु बना देने छल। हम प्रसन्न छलहुँ जे अंतत: हमर कथन सही सिद्ध भेल। आब ओकरा बुझबामे एतैक जे, जे कियो ओकरा गोमतीसँ विवाह करबासँ रोकैत छलैक ओ सभ ओकर शुभ-चिन्तक छलैक। 'ओ केहन बूड़ि छल,' हम मोने-मोन सोचलहुँ, 'जे गोमतीसँ बियाह करब ओ अपन भाग्यक गप्प बुझलक। सैह टा नहि, ई बियाह करब ओकरा स्वर्गमे प्रवेश कर' जकाँ लागल छलैक।' हमरा ओकरासँ भेट करबाक बहुत उत्सुकता भेल छल।

ओहि दूपहरियामे जखन ओ भेटायल तँ ओ पूर्णत: टूटल लागि रहल छल। हमरा देखैत

ओ रूदन करऽ लागल आ कहलक, "बाबू, गोमती हमरा छोड़िकेँ चल गेल अछि।

हम उपरी सहानुभूति देखबैत बजलहुँ, "हम तँ तोरा शुरूहे मे कहने छलियह जे ओकरासँ दूरे रहियह मुदा तो नहि सुनलहक। तोहर कोनो समान तँ ओ नहि ल' गेल छह ?''

गंगू हृदय पर रखैत तेना बाजल जेना कि हम कोनो पापक गप्प कहि देने होइयैक, "से नै कहियौ, बाबू' कोनो टा वस्तु नै ल' गेल अछि। ओकर अपनो समान सभ ओहिना पड़ल छैक। हमरा नहि बुझ' मे अबैत अछि जे ओकरा हमरामे कोन कमी लगलैक जे ओ हमरा छोड़िकेँ जेबाक निर्णय केलक। हमरा विश्वास अछि हम ओकरा योग्य नहि छलियैक। ओ पढ़ल-लिखल छल आ हम पूर्णत: निरक्षर छी। आओर किछु दिन जँ हम ओकरा संग रहितियैक तँ ओ हमरा योग्य मनुक्ख बना दितय। ओ आन पुरुष सभक लेल जे हुअए, हमरा लेल तँ जरूरे भगवती छल। हमरासँ अवश्य कोनो गलती भ' गेल होयत जे गोमती हमरा छोड़बाक निर्णय लेलक।''

गंगूक गप्पसँ हमरा बड्ड निराशा भेल छल। हमरा विश्वास छल जे ओ हमरा गोमतीक विश्वासघात द' कहत आ तखन हमरा ओकरासँ सहानुभूति व्यक्त कर' पड़त। मुदा लगैत छल जे ओहि मूर्खक आँखि सभ एखनहु बन्द छलैक अथवा संभवत: ओकर ज्ञानक संवेद समाप्त भ' गेल छलैक।

हम कन परिहास करैत कहलियैक, "अर्थात् ओ कोनो वस्तु डेरा परसँ नै ल' गेल छह ?''

"नै एक्को पाइक वस्तु नहि।''

"आ ओ तोरा खूब मानैत छलह ?''

"बाबू, एहिसँ बेसी हम की कहि सकैत छी ? हम यावत् जीव ओकरा नहि बिसरि सकैत छी।''

"आ तैयो ओ तोरा छोड़बाक फैसला केलकह ?''

"तेकरे तँ हमरा आश्चर्य होइत अछि।''

"तोँ कहियो ई पुरान उक्ति सुनने छहक, 'चंचलता, तोहर नाम स्त्री छह!'?''

"ओह, बाबू से नहि कहियौ! ओकरा द' हम एक्को छन ओहेन बात नहि सोचि सकैत छी।''

"हँ मालिक, हमरा तावत तक चैन नै भेटत यावत हम ओकरा ताकि नहि लेबैक। हमरा

मात्र एतबा टा बुझबामे आबि जइतय जे ओकरा कत' ताकी! हमरा विश्वास अछि जे हमरा लग ओ घूमिके आबि जायत। हमरा ओकरा जाक' जरूर ताकबाक चाही। जँ जीवैत रहलहुँ त' घूमि क' आयब तँ अहाँसँ भेट करब

एहि घटनाक बाद हमरा नैनीताल जाय पड़ल। आ लगभग एक मासक बाद हम ओत' सँ घुरलहुँ। हम एखन कपड़ा सभ खोलनहि छलहुँ कि देखलियैक जे गंगू एकटा नवजात शिशुक संग ठाढ़ छल। ओ खुशीसँ गद्‌गद् छल। संभवत: नंद के सेहो भगवान कृष्णक जन्म पर एतेक खुशी नहि भेल होन्हि। ओकर चेहरा पर तेहने चमक छलैक जेहन कोनो भुखायल मनुक्खके भरि पेट खेनाइ भेटला पर होइत छैक। हम फेर हंसी करैत ओकरासँ पुछलियेक, "की तोरा गोमती देवी के कोनो खबरि भेटलह ? तोँ ओकरा ताक' लय जाय बला छलहक।"

प्रसन्नतासँ भरल गंगू बाजल छल, "अंतत: ओकरा हम ताकिये लेलियैक बाबूजी। ओ लखनऊक महिला अस्पतालमे भरती छल। ओ अपन एकटा सखीके कहि देने छलैक जे जँ हम बहुत घबड़ा जइयेक तँ हमरा ओकर पता-ठेकान ओ बता दियए। हम तहिना ई सुनलियैक हम तुरते लखनऊ गेलहुँ आ' ओकरा ल' अनलियेक। आ सौदामे हमरा ई बच्चा सेहो भेटल अछि।" ओ ओहि बच्चा के हमरा ततबे गर्व सँ देखओलक जतबा गर्वसँ कोनो एथलीट अपन तुरत जीतल पदक देखाओत।

ओकर निर्लज्जता पर हमरा आश्चर्य भेल। ओकर गोमतीसँ विवाहक छओ मास नहि भेल छलैक ओ ओतेक गर्व सँ ओहि बच्चा के देखा रहल छल। हम व्यंगपूर्वक कहलियैक, "ओह तोरा एकटा बेटा सेहो भ' गेलह। संभवत: तैं गोमती भागि गेल छलह। तोरा विश्वास छह जे ई तोरे बच्चा छियह ?"

"हमर कियेक बाबू, ई तँ भगवानक बच्चा थिक।"

"एकर जन्म लखनऊमे भेलैक। छैक ने ?"

"हँ बाबू! काल्हिये तँ एकर एक मास पुरल छैक।"

"तोहर बियाहक कैक मास भेल छह ?"

"ई सातम मास भेल।"

"अर्थात् ई बच्चा तोहर बियाहक छह मासक भीतरे भ' गेलह ?"

"जी," गंगू बिना उत्तेजित भेने बाजल छल।

"आ तैयो तोँ एकरा अपन बच्चा कहैत छहक?"

"हँ मालिक।''

"तों होसमे तँ छह?'' हम पुछलियैक। हम निश्चित नहि छलहुँ जे हम जे गप्प ओकरा कह' चाहैत छलियैक से ओ ठीकेमे नहि बुझने छल आ कि ओ जानि के हमर गप्पक गलत अर्थ लगा रहल छल।

"ओकरा बड्ड कष्ट भेलैक,'' गंगू ओही सुरमे बजैत रहल, "बाबू , ओकरा लेल ई एक तरहक पुनर्जन्म छैक। पूरा तीन दिन आ तीन राति ओकरा दरद होइते रहलैक। ओह, ओ दरद असहनीय छलैक।''

ई हमरा लेल बीचमे टोकबाक बेर छल। हम कहलियैक, "अपन जीवनमे पहिले बेर बियाहक छओ मासक भीतर बच्चाक जन्म होइत सुनलियैक अछि।''

ई प्रश्न गंगू के आश्चर्यचकित क' देने छलैक। ओ कने नटखट मुस्कुराहटक संग कहलक, "तकर हमरा कहियो चिन्ता नै भेल अछि। संभवत: यैह कारण छल जे गोमती हमर घर छोड़ि देने छल। हम ओकरा कहलियैक जे जँ हमरासँ ओ प्रेम नहि करैत अछि तँ ओ आरामसँ जा सकैत अछि। हम ओकरा कहियो तंग नै करबैक। मुदा जँ ओकरा हमरासँ प्रेम होइ तँ ओहि बच्चाक चलैत हमरा सभ के अलग नै होयबाक चाही। हम एकरा अपन बच्चा जकाँ मानबैक। कियेक तँ आखिर जखन कोनो व्यक्ति बाओग कयल खेत लैत अछि तँ ओ ओकर उपज के मात्र ताहि द्वारय लेबासँ इन्कार नहि क' देतैक कियेक तँ कियो आओर ओकरा बाउग केने छल।''

हम जोरसँ हँसल छलहुँ। गंगूक भावनासँ हम अत्यंत द्रवित भेल छलहुँ । हम अपना के प्रचण्ड मूर्ख अनुभव केने छलहुँ। हम अपन हाथ बढ़ा देलियैक आ ओहि बच्चा के गंगूसँ ल' क' ओकरा चुम्मा लेलियैक। गंगू कहलक, "बाबू, अहाँ भद्रताक प्रतिमूर्त्ति छी। हम अधिक काल गोमतीसँ अहाँ द' गप्प करैत छी आ ओकरा कैक बेर एत' आबि क' अहाँसँ आशीर्वाद लेबा लय कहलियैक अछि। मुदा ओ ततेक ने लजकोटर अछि।''

हम आ भद्रताक प्रतिमूर्ति! हमर मध्यवर्गीय नैतिकता गंगूक साहस एवं सद्भावनाक समक्ष लज्जित भ' गेल छल।

"तोँ साधुताक प्रतिमूर्ति छह।'' हम कहलियैक, "आ ई बच्चा तकरामे मनोहरता आनि देने छह। चल' हम तोरा संग चलैत छियह गोमतीसँ भेट करबाक लेल।'' आ हम दूनू गोटय गंगूक झोंपड़ी पर गेल छलहुँ।